Krishna Nand B.A III Hon's (1)

के बीच का संबंध ज्ञात नहीं हो पाता है।

(C) प्रयोगात्मक शोध (Experimental Research)

प्रयोगात्मक शोध में शोधार्थी द्वारा चरों में हेरफेर प्रयोगात्मक रूप से किया जाता है। अर्थात इस प्रकार के शोध में ई-टाईप स्वतंत्र चर का व्यवहार किया जाता है। टाईप-ई स्वतंत्र चर ऐसे चर को कहा गया है जिसमें सीधे तौर पर आवश्यकतानुसार जोड़-तोड़ किया जाता है। प्रयोगात्मक शोध की एक विशेषता यह पाई जाती है कि इसे प्रयोगशाला के साथ-साथ क्षेत्र में पूर्ण कुशलता के साथ की जा सकती है।

सीखने पर पुरस्कार के प्रभाव के अध्ययन के लिए समान आयु एवं बुद्धि के बच्चों के समूह का चयन किया गया। साथ-साथ ही समान कठिनता स्तर के पाठ को दोनों समूहों को याद करने के लिए समान समय निर्धारित किया गया। अब एक समूह के लिए पुरस्कार की घोषणा की गई और दूसरे समूह को सीखने के लिए पुरस्कार देने या न देने की कोई बात न की गई। पाया गया कि सीखने के लिए पुरस्कार पाने वाले समूह का निष्पादन पुरस्कार के बगैर सीखने वाले समूह से अधिक है। इस प्रकार यहाँ पुरस्कार ई-टाईप स्वतंत्र चर का सुन्दर उदाहरण

Krishna Nand B.A III Hons ②

11

है क्योंकि इसन्चर आमि पुरस्कार में सीधे हस्ताक्षेप किया गया है।

दोष :- (i) इसका एक प्रमुख दोष यह है कि इसे हर परिस्थिति में नहीं अपनाया जा सकता है। माना कि किसी प्रयोग में प्रयोज्य को शारीरिक या मानसिक पीड़ा झेलनी की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना रहती है तो प्रयोज्य को तैयार करना कठिन होगा।

(ii) प्रयोगात्मक शोध में अस्वाभाविक परिस्थित पैदा होने की प्रबल संभावना बनी रहती है जिससे परिणाम प्रभावित होने का भय सदैव बना रहता है।

मूल्यांकन :- आधुनिक समय में मानवीय जिज्ञासा की संतुष्टि, ज्ञान की वृद्धि, व्यवहारिक समस्याओं के समाधान, सामाजिक प्रगति, मानवता के कल्याण आदि क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक शोध की अत्यन्त आवश्यकता है। मनोविज्ञान में इस प्रकार के शोधों के लिए व्यापक स्थान है। सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक विकास से संबंधित शोध कार्य आजकल बड़े व्यापक पैमाने पर और तेजी से चल रहे हैं।

(ङ) रोगी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति सीधी करनी चाहिए, उसकी व्याख्या नहीं करनी चाहिए।
(च) रोगी को दुखद एवं सुखद वस्तुओं स्थितियों से अवगत होना चाहिए।
(छ) रोगी को वे सभी विचार एवं चिंतन जो उनके अपने नहीं है, के बारे में सोचना नहीं चाहिए।
(ज) रोगी को वास्तविकता का आदर करना चाहिए।

मूल्यांकन —

यह चिकित्सा प्रविधि भी अन्य प्रविधियों की भाँति सैद्धान्तिक मनोविज्ञानियों के बीच सर्वमान्य चिकित्सा प्रविधि नहीं है। इस प्रविधि की भी कुछ खूबियाँ और खामियाँ हैं, जो निम्नांकित हैं —

गेस्टाल्ट चिकित्सा प्रविधि के गुण या लाभ-

(i) गेस्टाल्ट चिकित्सा में वर्तमान, उत्तरदायित्व अनुभव तथा अभिज्ञा पर अधिक बल डालकर स्पष्टतः दिखलाया गया है कि रोगी के व्यवहार में परिवर्तन करने के लिए अतीत गत अनुभूतियों का विश्लेषण आवश्यक नहीं है। इससे सूझ-उन्मुखी चिकित्सा में एक तरह की क्रांति उत्पन्न हुई।
(ii) गेस्टाल्ट चिकित्सा प्रविधि की संचालन विधियाँ अत्यन्त सरल एवं सुगम हैं। फलतः यह प्रविधि बहुत ही उपयोगी है।

दोष या अभाव

(i) गेस्टाल्ट चिकित्सा विधि वस्तुनिष्ठ न होकर आत्मनिष्ठ विधि है। फेगर्स (1984) के मतानुसार, इस चिकित्सा की प्रविधि में इतनी अधिक भिन्नता है कि उसके आधार पर कोई संगठित एवं समन्वित वस्तुनिष्ठ आँकड़े प्राप्त करना असंभव है।
(ii) गेस्टाल्ट चिकित्सा में रोगी के वर्तमान पर बल डाला जाता है तथा उसके भूत एवं भविष्य की अवहेलना प्रर्दशित की जाती है। फलतः

वर्तमान ...